इंदौर कैंसर फाउंडेशन धर्मार्थ न्यास के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैड एंड नैक ऑंकोलॉजी में 26 अगस्त, 2014 को सिद्धार्थ- III स्वदेशी लिनियर एक्सीलेरेटर सुविधा आरंभ किए जाने के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैड एंड नैक ऑंकोलॉजी, इंदौर में लिनियर एक्सीलेरेटर सिद्धार्थ- III की सुविधा आरंभ किए जाने के अवसर पर आप सबके बीच आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। भारत सरकार के इलैक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा इस मशीन का डिजाइन देश में ही तैयार और विकसित किया गया है। मैं इंदौर कैंसर फाउंडेशन धर्मार्थ न्यास को एक आधुनिक उपकरण प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई देती हूं। इससे बड़ी संख्या में कैंसर रोगियों और विशेष रूप से रेडियोथेरेपी उपचार करवा रहे रोगियों को नि:संदेह बहुत लाभ होगा। मुझे विश्वास है कि यह उपकरण अपनी जिंदगी की लड़ाई लड़ रहे कैंसर रोगियों के लिए एक आशा की किरण सिद्ध होगा।

मित्रो, एक बहुत पुरानी और लोकप्रिय कहावत है कि तंदरूस्ती हजार नियामत होती है और यह कहावत हम सब के लिए बहुत प्रासंगिक है। आज स्वास्थ्य मानव संसाधन पूंजी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह चिंता का विषय है कि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा जुलाई, 2014 में जारी नवीनतम मानव विकास प्रतिवेदन के अनुसार मानव विकास सूची में हमारे देश का स्थान 135वां है जो संभवतः पर्याप्त और आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधा की कमी के कारण है। यदि हम अपने देशवासियों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना चाहते हैं तो स्वास्थ्य सुविधाएं स्तरीय होनी चाहिए तथा अस्पताल रोगियों को समुचित और किफायती उपचार सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सुसज्जित होने चाहिए। अतः चिकित्सा संस्थानों और स्वास्थ्य सेवाओं को हमारे देश के मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारी सरकार सबके लिए स्वास्थ्य सुविधा और जरूरतमंद लोगों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए वचनबद्ध है। संपूर्ण भारत में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं बढ़ाने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन शुरू किया जाना, डाक्टर-रोगी के अनुपात को 1:2000 से वर्ष 2021 तक 1:1000 करना, चिकित्सा संबंधी शोध में सार्वजनिक- निजी भागीदारी को बढ़ावा देना तथा हरियाणा में झज्जर में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान की स्थापना भारत सरकार द्वारा की गई कुछ उल्लेखनीय पहलें हैं।

हमारे जैसे देश में जहां संसाधन बहुत ही सीमित हैं, यह आवश्यक हो जाता है कि सरकारी प्रयासों के साथ-साथ स्वैच्छिक संगठन और धर्मार्थ न्यास भी इस दिशा में प्रयास करें। इस संदर्भ में वर्ष 1988 में इंदौर कैंसर फाउंडेशन धर्मार्थ न्यास और तदनन्तर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैड एंड नैक ओंकोलॉजी की स्थापना नि:संदेह एक सराहनीय प्रयास है। मुझे खुशी है कि केवल इंदौर तक सीमित न रहकर आसपास के क्षेत्रों के लोगों की सेवा करते हुए यह न्यास 25 वर्षों से जन सेवा कर रहा है। यह प्रशंसनीय है कि यहां हमारे समाज के दलित और उपेक्षित वर्गों को धर्मार्थ आधार पर नि:शुल्क उपचार सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। यह देखकर भी खुशी होती है कि इतने वर्षों में इस न्यास ने विशेष रूप से सिर और गर्दन के कैंसर के उपचार के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर ली है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैड एंड नैक ओंकोलॉजी, इंदौर अब कैंसर उपचार के उन्नत उपकरणों से सुसज्जित है और अपनी तरह का अनूठा संस्थान है।

मित्रो, हम जानते हैं कि कैंसर भारत में होने वाली मौतों का एक प्रमुख कारण है। यह भी चिन्ता का विषय है कि देश में कैंसर के रोगियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जा रही है। 6 से 7 लाख लोग प्रति वर्ष कैंसर का शिकार हो रहे हैं और देश में सभी वयस्कों की मौतों में से 6 प्रतिशत की मृत्यु इसी रोग से होती है। लोगों में इस रोग के बारे में अज्ञानता, विलम्ब से इस रोग का पता लगने और चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण कैंसर एक 'मारक रोग' के रूप में जाना जाने लगा है। हम जानते हैं कि यदि आरम्भिक चरण में ही कैंसर का पता लग जाता है तो इसका उपचार हो सकता है और रोगी ठीक होकर एक स्वस्थ और सामान्य जीवन जी सकता है। किन्तु इस रोग से प्रभावित लोगों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कैंसर के उपचार की सुविधाएं कुछेक अस्पतालों में ही उपलब्ध हैं और मुख्यतया बड़े शहरों में ही सीमित होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के रोगियों को ये सुविधाएं आसानी से उपलब्ध नहीं होतीं। कैंसर का इलाज प्रायः कई महीनों या सालों तक चलता है और इसके लिए बार-बार अस्पताल जाना पड़ता है, इसीलिए कैंसर के रोगी अक्सर प्रस्तावित उपचार को जारी नहीं रख पाते और इससे भी बढ़कर कैंसर का उपचार बहुत महंगा होता है जिसके कारण बहुत से रोगी बीच में ही इलाज छोड़ देते हैं अथवा सस्ते और वैकल्पिक उपचार कराने लगते हैं जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे बताया गया है कि हमारे देश में 75 प्रतिशत से अधिक खर्च का इन्तजाम कैंसर के रोगियों को स्वयं ही करना पड़ता है जिससे रोगी पर दीर्घकालिक वित्तीय बोझ पड़ता है।

मित्रो, कैंसर के विरूद्ध लड़ाई में किफायती इलाज अति महत्वपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि उपचारात्मक से निवारात्मक स्वास्थ्य देखभाल की दिशा में अग्रसर होना सर्वाधिक उपयुक्त मार्ग है क्योंकि यह महंगा नहीं है। हमारे देश में मुंह का कैंसर बहुत आम है और यह तम्बाकू चबाने से होता है। लगभग 40 प्रतिशत मामलों में कैंसर का कारण तम्बाकू होता है। हम यह भी जानते हैं कि धूम्रपान से

फेफड़े का कैंसर होता है। निवारात्मक स्वास्थ्य देखभाल उपायों के बारे में जागरूकता, तम्बाकू चबाने और धूम्रपान के खतरे के बारे में चेताए जाने, साफ-सफाई और स्वच्छ पेयजल के महत्व को जानने इत्यादि से कैंसर होने की संभावना में कमी आएगी। विभिन्न प्रकार के कैंसरों के लक्षणों के बारे में जागरूकता विकसित करने से प्रारम्भिक चरण में ही कैंसर का पता लगाने में मदद मिलेगी। मैं यहां इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगी कि कैंसर का मुकाबला करने में डाक्टरों को सक्षम बनाने के लिए चिकित्सा विज्ञान में शोध और विकास तथा नवीनतम प्रौद्योगिकीय उपकरणों की उपलब्धता आवश्यक है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस संस्थान में कैंसर के इलाज के लिए कम लागत वाला प्रतिरूप विकसित करने पर ध्यान दिया गया है और यह राष्ट्रीय प्रतिरूप बन सकता है। मुझे विश्वास है कि अगले महीने मुंह और गले के कैंसर के खतरे की संभावना वाले लोगों का पता लगाने के लिए ऑप्टिकल स्पैक्ट्रोस्कोपी सुविधा आरंभ किए जाने से इस रोग के शीघ्र निदान और उपचार में मदद मिलेगी। मैं डाक्टर दिगपाल धारकर को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे यहां आमंत्रित कर विशिष्टजनों के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान किया। यहां आने से मुझे इस प्रतिष्ठित संस्थान के कार्यकरण को समझने में मदद मिली है। मैं डा. धारकर और उनके साथ काम कर रहे डाक्टरों को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हैड एंड नैक ऑंकोलॉजी को प्रमुख अस्पताल बनाने के लिए उनके द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों के लिए बधाई देती हूं। मैं कैंसर का मुकाबला करने में आपके भावी प्रयासों में सफलता की कामना करती हूं। उसके साथ ही मुझे लिनियर एक्सिलरेटर मशीन का शुभारम्भ करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

धन्यवाद।